सरला सिंह स्निग्धा
जन्मतिथि- 04.04.1965
जन्मस्थान - उत्तर प्रदेश
पिता का नाम- स्वर्गीय बासुदेव सिंह
माता का नाम- स्वर्गीय कैलाश देवी
मोबाइल नम्बर - 9650407240

माया का सब खेल है, माया से ही प्यार।
बदल रहा है आदमी , मिले न कोई यार ।
मिले न कोई यार , स्वार्थ के पुतले सारे।
मतलब का बस साथ, करें पल में वे न्यारे।
लोभ मोह छल दम्भ, सभी में देखो छाया।
करते उससे प्यार, जहां पर मिलती माया।।
****

होना ही था एक दिन , उनका यह अंजाम।
पाप कर्म में लिप्त थे, मिला धूल में नाम।
मिटा धूल में नाम , देख सब कांपें पापी ।
भूले पिछली चाल , काल ने गर्दन नापी ।
रटते अब प्रभु नाम, भूल कर कांटे बोना।
चलना सच की राह, कुपथगामी मत होना।।
****

जो घमंड में चूर वे , जिनसे जग बेहाल।
पड़ी समय की मार तो, खत्म हुई सब चाल।
खत्म हुई सब चाल , गिरे सीधे मुंह के बल ।
ईश्वर का इंसाफ , तोड़ देता है सब छल ।
चलना सच की राह, नहीं तू माया में खो ।
मिले महज़ दिन चार, जगत में आया है जो।।
****

मानव अब तो चेत जा , क्यों बनता नादान।
जीवन यह बहुमूल्य है, ले तू इसको जान ।
ले तू इसको जान , दानवी वृत्ति तोड़ दे ।
कर सबका उपकार, नफरतें सभी छोड़ के।
मानवता को थाम , नहीं बनना तू दानव ।
सदा सत्य को जान, यार तू तो है मानव ।।
****

आये कितने दूर से, तेरे कितने दास।
मां तेरे दरबार में , दर्शन की ले आस।
दर्शन की ले आस , दरस दो माता अबकी।।
तुम में शक्ति अपार, साध पूरी कर सबकी।
अद्भुत मां का प्यार, आज सबको मिल जाये।
भरती झोली मात , पास में जो भी आये ।।
****

कहते जिसको कर्म हैं, वो ही है बलवान।
जिसकी जैसी साधना, वैसा पाता मान ।
वैसा पाता मान , कर्म ही सब पर भारी।
होता पूरा काम , कहें सारे नर नारी ।
करते जो आराम, कष्ट जीवन में सहते।
बड़े बड़े विद्वान , बात समझा कर कहते।।
****

धरती दुल्हन सी सजी , धानी चूनर धार ।
फागुन फागुन मन हुआ,सजा गले में हार।
सजा गले में हार , रंगीली सी वो लगती ।
सुंदर रूप अपार, प्रीत मन में है जगती ।
कोयल गाती गीत, शगुन मानों वह करती।
झांक रहा आकाश , देख सुन्दर सी धरती।।
****

माता सबको बुद्धि दें, करें ज्ञान उपयोग ।
कृपा करो मां शारदे , चलें सुपथ पर लोग।
चलें सुपथ पर लोग , कुमति सबका मिट जाए।
आपस में हो प्रेम , घृणा दिल में नहि आए ।
झोली उसकी भरे , शरण जो तेरी आता।
करना सबपर दया, यही अर्जी है माता ।।
****

मानव यदि जी जान से, लेता कुछ है ठान ।
सब कुछ संभव है यहां , इसको लेना मान ।
इसको लेना मान , प्रबल है कर्म यहां पर ।
सूरज के नजदीक, चांद पर बन जाए घर ।
सागर को ले साध , भगा दे जग से दानव ।
राम राज्य आ जाय , ठान ले गर ये मानव ।।
****

धीरे-धीरे घट रहा , शीत लहर का जोर।
कोयलिया गाती मगन, नाच उठा मन मोर।
नाच उठा मन मोर , भ्रमर गुंजन है वन में।
आम्रबौर की गंध , समाये देखो मन में।
घूम रहे वे साथ, नदी के तीरे - तीरे ।
बढ़ता है विश्वास, देख ले धीरे-धीरे ।। ।।
****